UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

# Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

*An International Peer Reviewed Refereed Research Journal*

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

**Dr. H.L. Sharma**
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

**Dr. Hans Prabhakar Ravidas**
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

**Dr. Anil Kumar**
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
**VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh**
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

| | | |
|---|---|---|
| ▸ | उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन<br>**डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 93-96 |
| ▸ | विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव<br>**अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय** | 98-102 |
| ▸ | प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन<br>**मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 103-106 |
| ▸ | माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन<br>**गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल** | 107-109 |
| ▸ | माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन<br>**महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 110-112 |
| ▸ | आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा<br>**डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी** | 113-116 |
| ▸ | उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन<br>**जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 117-120 |
| ▸ | करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन<br>**श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 121-125 |
| ▸ | माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन<br>**श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 126-128 |
| ▸ | स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन<br>**श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 129-132 |
| ▸ | सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन<br>**विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 133-136 |
| ▸ | स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव<br>**मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी** | 137-139 |
| ▸ | सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन<br>**विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा** | 140-142 |
| ▸ | The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa<br>**Anamika Pandey** | 143-152 |
| ▸ | Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population<br>**Devyani Awasthi** | 153-157 |

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

# सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन

**विनोद कुमार शर्मा**
सहायक आचार्य, (शारीरिक शिक्षा) वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
**मो0 आरिफ**
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
**डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)

**सारांश**

*अच्छे शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है प्रभावशाली व्यक्तित्व का तात्पर्य है कि एक ऐसा शिक्षक दृढ़ इच्छाशक्ति वाला तथा आत्मविश्वासी हो साथ ही वह चरित्रवान कर्तव्य पालन करने वाला तथा स्वस्थ निरोगी हो अच्छे शिक्षक के गुणो का तथा प्रशंसनीय आदतों का विद्यार्थियों के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता है। उसकी समस्त रुचिया तथा अभिरुचियों ही विद्यार्थियों की रुचियां व अभिरुचियों बन जाती है। जिन शिक्षको में उपयुक्त गुण नहीं होते वे विद्यार्थी को प्रभावित करने में असफल होते हैं। अतः शिक्षको में सभी गुणों के साथ–साथ अच्छी आदतें आचार विचार आदि होना आवश्यक है। इन्हें अपना कर वे अपने व्यक्तित्व को प्रभावशील बनाने का प्रयास कर सकते हैं।*

*शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में २०० विद्यार्थियों को रखा गया न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए बालक बालिकाओं को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया जिसमें स्व निर्मित एवं तीन बिंदु मापनी का उपयोग किया गया जिसमें सहमत असहमत तथा अनिश्चित तीन बिंदु चयन के लिए है। आंकड़ों की सांख्यिकी विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया।*

## शोध समस्या की प्रस्तावना

शिक्षा द्वारा मनुष्य का व्यक्तित्व विकास ही नहीं होता बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक विकास भी होता है। हम यह भी कह सकते हैं कि शिक्षा व्यक्ति तो सामाजिक जीवन में अपना उचित स्थान ग्रहण करने योग्य बनाती है मनुष्य मूलतः पशु प्रवृत्ति रखता है अतः उस समाज सम्मत व्यवहार की आवश्यकता होती है। जिससे वह अपनी भावनाओं अभिलाषाओं और व्यवहारों पर अधिकार करना सीख जाए समाज सम्मत व्यवहार करके ही वह समाज का उत्तरदाई सदस्य बन सकता है। उसे यह व्यवहार करना शिक्षा द्वारा ही सिखाया जाता है इसके बिना वह नैतिक और व्यावसायिक जीवन व्यतीत करने में कठिनाई का अनुभव करता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति विचार करना नहीं सिखाती मात्र मृत और उधार विचार देकर ही तृप्ति हो जाती है। शिक्षा के द्वारा बच्चों की जिज्ञासा जागृत करनी चाहिए उन्हें जीवन समाज प्रकृति और राज्य व्यवस्था के प्रति संवेदनाशील बनाया जाए और उनके प्रति प्रश्न उठाने की क्षमता पैदा की जाए शिक्षा के माध्यम से भद्दा विश्वास आदर्श और अनुकरण नहीं सिखाया जाना चाहिए शिक्षा का बाल विचार और विवेक की जागरण पर होना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षण देने हेतु तथा शिक्षण की व्यवस्था के लिए अनेक महाविद्यालय स्थापित किए गए है जिनका संचालन विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। इस स्तर पर स्नातक छात्रअध्यापकों को शिक्षण कार्य का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम सामान्य 1 वर्षीय ही है सामान्यतः बीटी एलटी वीएड एमएड की उपाधियां इस स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के लिए हैं। इसके अतिरिक्त विशिष्ट विषयों के शिक्षण हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है।

अच्छे शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है प्रभावशाली व्यक्तित्व का तात्पर्य है कि एक ऐसा शिक्षक दृढ़ इच्छाशक्ति वाला तथा आत्मविश्वासी हो साथ ही वह चरित्रवान कर्तव्य पालन करने वाला तथा स्वस्थ निरोगी हो अच्छे शिक्षक के गुणो का तथा प्रशंसनीय आदतों का विद्यार्थियों के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता है। उसकी समस्त रुचिया तथा अभिरुचियों ही विद्यार्थियों की रुचियां व अभिरुचियों बन जाती है। जिन शिक्षको में उपयुक्त गुण नहीं होते वे विद्यार्थी को प्रभावित करने में असफल होते हैं। अतः शिक्षको में

सभी गुणों के साथ–साथ अच्छी आदतें आचार विचार आदि होना आवश्यक है। इन्हें अपना कर वे अपने व्यक्तित्व को प्रभावशील बनाने का प्रयास कर सकते हैं।

**शोध समस्या का औचित्य**

समस्या की सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि अध्ययन की उपादेयता तथा उपयोगिता शिक्षा जगत के लिए क्या है अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा संबंधी ज्ञान में क्या वृद्धि करेंगे समस्या के परिणाम से तत्काल लाभ हो यह आवश्यक नहीं है। लाभ तो भविष्य में भी हो सकता है कई बार प्राप्त निष्कर्ष से दूसरे अनुसंधान का मार्ग खुल जाता है तथा कार्य का महत्व और भी बढ़ जाता है।

आदर्श शिक्षक की महत्वपूर्ण विशेषताओं में एक है प्रभावी व्यक्तित्व गुण समायोजन शिक्षकों के व्यक्तित्व से ही विद्यार्थी बहुत प्रभावित होते हैं। इनका अनुसरण करते हैं इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने में मदद करते हैं। शिक्षक कक्षा में अच्छा समायोजन स्थायित्व करते हैं वे विद्यार्थियों को समायोजित होने में सहायता प्रदान करते हैं। कक्षा में प्रेम पूर्ण व्यवहार कर कक्षा में नियम पालन व उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए प्रभावी व्यक्तित्व और हर परिस्थिति में समायोजित होने का गुण अनिवार्य है जिसका प्रशिक्षण विद्यार्थियों को विद्या अध्ययन काल में दिया जाता है जिसका दायित्व शिक्षक का होता है। अतः शिक्षकों का व्यक्तित्व प्रभावी समायोजन स्तर अच्छा होना आवश्यक है तभी वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु मार्गदर्शन दे सकेंगे शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में हर क्षेत्र के विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के व्यक्तित्व समायोजन में अंतर होता है यह अंतर कितना होता है इसका पता शोध के द्वाराआकलन करके ही ज्ञात किया जा सकता है। अतः बी एड में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थि सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन करना ही समस्या का औचित्य है ताकि इस अध्ययन से बी एड प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने में मार्गदर्शन प्राप्त होगा इस अध्ययन से उन्हें समायोजित होंने में भी सहायता प्राप्त होगी।

**शोध समस्या**

"सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी.एड. में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन।"

**शोध समस्या के अध्ययन के उद्देश्य**

शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

- सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों, प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन करना
- अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन करना

**तकनीकी शब्दों का पारिभाषिकरण**

**व्यक्तित्व –** मनुष्य की कोई भी शारीरिक व मानसिक क्रिया व्यक्तित्व से पृथक नहीं है व्यक्तित्व में समग्रता या समुच्चय है जिसमें व्यक्ति के संपूर्ण व आंतरिक गुना का समावेश होता है। व्यक्तित्व में सभी मानसिक क्रियाएं शामिल होती हैं जो गतिशील संघठन से व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं। व्यक्तित्व केवल वह्रयकारकोसे ही निर्धारित नहीं होता अपितू उसके लिए कुछ आंतरिक गुणों का होना भी नितांत आवश्यक है।

**समायोजन –** मनुष्य समाज में रहकर अपने दायित्वों का निर्वाह करता है उसकी अनेक शारीरिक सामाजिक व व्यक्तिगत आवश्यकताएं होती हैं। ये आवश्यकताएं व्यक्ति को कुछ ना कुछ करने के लिए वाद्य करती है आवश्यकता से संबंधित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है तो व्यक्ति के अंदर कुंठा व तनाव की उत्पत्ति उत्पन्न हो जाती है। समायोजन का अर्थ स्पष्ट करते हुए गेट्स व अन्य विद्वानों ने लिखा है कि समायोजन शब्द के दो अर्थ है एक अर्थ में निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं एवं पर्यावरण के बीच अधिक सामंजसपूर्ण संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर देता है।

**शोध समस्या का परिसीमन**

समस्या के अध्ययन के लिए संभाग की दृष्टि से गंगापुर सिटी को चुना तथा समस्या के समयाभाव के कारण गंगापुर सिटी तक ही सीमित रखा। शोध अध्ययन के लिए गंगापुर सिटी शहर के दो शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय अग्रवाल महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं भगवती स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्यनरत छात्रों का चयन किया गया।

**शोध समस्या के अध्ययन का प्रारूप**

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा न्यादर्श के

रूप में २०० विद्यार्थियों को रखा गया न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए बालक बालिकाओं को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया जिसमें स्व निर्मित एवं तीन बिंदु मापनी का उपयोग किया गया जिसमें सहमत असहमत तथा अनिश्चित तीन बिंदु चयन के लिए है। आंकड़ों की सांख्यिकी विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया।

**शोध समस्या के आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण**

**सारणी–1 : सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बीएड में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन के आंकड़े**

| क्र.सं. | श्रेणी | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | Dm | प्रमाप त्रुटि | मूल्य t | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सामान्य वर्ग | 50 | 5.22 | 1.46 | 0.62 | 0.35 | 1.77 | असार्थक |
| 2 | अन्य पिछडा वर्ग | 50 | 5.84 | 2.00 | | | | |

df = 98

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63

उपरोक्त सारणी में सामान्य तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के घटक का मध्यमान 5.22 व 5.84 है अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों से 0.62 अधिक है। सामान्य वर्ग के लिए प्रमाण विचलन 1.46 तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 2.00 है प्रमाण त्रुटि 0.35 है गणना द्वारा टी मूल्य 1.77 प्राप्त हुआ।

अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्तित्व के घटक ए पर सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक एक सामान्य वर्ग व पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के लिए कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक एक सामान्य वर्ग व पिछड़ा वर्ग के बीएड के प्रशिक्षणार्थियो व्यक्तित्व घटक ए में सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की गई है।

**सारणी–2 : सामान्य व अन्य पिछड़ा वर्ग के बीएड में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियो के व्यक्तित्व एवं समायोजन के आंकडे**

| क्र.सं. | श्रेणी | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | Dm | प्रमाप त्रुटि | मूल्य t | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सामान्य वर्ग | 50 | 6.82 | 1.64 | 0.76 | 0.31 | 2.45 | असार्थक |
| 2 | अन्य पिछडा वर्ग | 50 | 6.06 | 1.54 | | | | |

df = 98

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63

उपरोक्त श्रेणी में सामान्य तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के घटक ठसे संबंधित मध्यमान 6.28 में 6.06 है। सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों से 0.76 अधिक है सामान्य वर्ग के लिए प्रमाप विचलन 1.64 तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 1.54 है प्रमाप त्रुटि 0.319 है गणना द्वारा टी मूल्य 0.69 प्राप्त हुआ है। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्तित्व के घटक भी पर समान वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों में सार्थक अंतर नहीं है प्रत्यक्ष परिकल्पना क्रमांक 2 सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बीएड के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के घटक में सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

**व्याख्या**

व्यक्तित्व का घटक कम बुद्धिमान तथा अधिक बुद्धिमान गुणोका मापक है घटक के 1 से 3 स्टेज स्कोर तक कम बुद्धिमान को दर्शाते हैं दोनों ही वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का घटक ठ पर मध्यमान 6.28 व 6.06 है जो बुद्धि के स्तर को प्रदर्शित करता है सामान्य वर्ग का मध्यमान अन्य पिछड़े वर्ग से थोड़ा अधिक है अर्थात सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की बुद्धि अन्य पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों से थोड़ी अधिक होती है लेकिन सार्थक अंतर नहीं है।

**सारणी–3 : सामान्य व अन्य पिछड़ा वर्ग के बीएड अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन के आंकड़े**

| क्र.सं. | श्रेणी | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | Dm | प्रमाप त्रुटि | मूल्य t | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सामान्य वर्ग | 50 | 4.62 | 1.83 | 0.22 | 0.34 | 0.64 | असार्थक |
| 2 | अन्य पिछडा वर्ग | 50 | 4.84 | 1.63 | | | | |

df = 98

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63

Impact Factor: 6.0
ISSN: 2393-8358

उपरोक्त सारणी में सामान्य तथा पिछड़ा वर्ग की प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के घटक से संबंधित मध्यमान 4.62 व 4.84 है सामान्य वर्ग की प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान 0.22 कम है सामान्य वर्ग का प्रमाप विचलन 1.83 तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का 1.63 है। प्रमाप त्रुटि 0.34 है गणना द्वारा मूल्य टी 0.64 प्राप्त हुआ है। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्तित्व के घटक ब पर सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग बीएड के प्रशिक्षणाथियों के व्यक्तित्व घटक ब में सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1. कॉल मैन, जेम्स सी, पर्सनालिटी डायनामाइक एंड इफेक्टिव बिहेवियर लॉस एंजिल्स स्कोट फोरमैन एंड कंपनी, 1969
2. सारसन्स इर्विन जी, व्यक्तित्व में समसामयिक खोज न्यूयॉर्क बैंक नाइट्रेट रेनहोल्ड कंपनी, 1961
3. व्यास हरिश्चंद्र गणपतराम शर्मा, अधिगम शिक्षण और विकास के मनो सामाजिक आधार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर